

ओशो के जन्मदिवस: दुख से सुख की ओर...

जब हमें यह बोध हो जाता है कि अपनी स्थिति के लिए हम ही जिम्मेदार हैं, दूसरा कोई नहीं, उस क्षण हमारे अंदर क्रांति आती है। हमारा रूपांतरण हो जाता है- दुख से सुख की ओर...

एक कॉलेज में प्रोफेसर था। नया-नया वहां पहुंचा। कॉलेज बहुत दूर था गांव से। सभी प्रोफेसर अपना खाना साथ लेकर ही आते थे और दोपहर को एक टेबल पर इकट्ठे होते थे। संयोग की बात थी कि मैं जिनके पास बैठा था, उन्होंने अपना टिफिन खोला, झांककर देखा और कहा, 'फिर वही आलू की सब्जी और रोटी! मुझे लगा कि उन्हें शायद आलू की सब्जी और रोटी पसंद नहीं है। मैं वहां नया था, इसलिए कुछ नहीं बोला। दूसरे दिन फिर वही हुआ। उन्होंने डब्बा खोला और फिर कहा, 'फिर वही आलू की सब्जी और रोटी! मुझसे रहा नहीं गया, मैंने कहा, 'अगर आलू की सब्जी और रोटी पसंद नहीं तो अपनी पत्नी को कहें कि वे कुछ और बनाएं। उन्होंने कहा- 'अजी, पत्नी कहां है, मैं खुद ही बनाता हूं।

यही हमारा जीवन है। कोई है ही नहीं। हम हंस रहे हों या रो रहे हों, इसका जिम्मेदार कोई भी नहीं। जिम्मेदार हैं तो सिर्फ हम। हो सकता है कि ज्यादा रोने से हमारी रोने की आदत बन गई हो। हम हंसना भूल गए हों। यह भी हो सकता है कि हम इतने रोए हों कि हमसे अब कुछ और करते बनता नहीं। यह भी हो सकता है कि लंबे समय तक रोते हुए हमें याद ही न हो कि रोने का ऑप्शन तो खुद हमने ही चुना था। लेकिन भूलने से सत्य असत्य नहीं होता। अगर तुमने ही चुना है, तो तुम ही मालिक हो। जिस क्षण तुम यह तय करोगे, उसी क्षण रोना रुक जाएगा।

'मैं ही मालिक हूं, मैं ही सृष्टा हूं, जो भी मैं कर रहा हूं, उसके लिए मैं ही जिम्मेदार हूं। इस बोध से भरने के बाद जीवन में क्रांति हो जाती है। जब तक तुम-दूसरे को जिम्मेदार समझोगे, तब तक क्रांति असंभव है, क्योंकि तब तक तुम दूसरों पर निर्भर रहोगे। तुम सोचते हो कि दूसरे तुम्हें दुखी कर रहे हैं, तो फिर तुम कैसे सुखी हो सकोगे? क्योंकि दूसरों को बदलना तुम्हारे हाथ में नहीं। तुम्हारे हाथ में तो केवल स्वयं को बदलना है। अगर तुम सोचते हो कि भाग्य के कारण तुम दुखी हो रहे हो, तब भी तुम्हारे हाथ में नहीं है। भाग्य को तुम कैसे बदलोगे? तुम सोचते हो कि तुम्हारे भाग्य में ही विधाता ने यह लिख दिया है, तो तुम एक परतंत्र यंत्र हो जाओगे।

दरअसल, जो पीड़ा तुम भोग रहे हो, यह तुम्हारे ही निर्णय का फल है। जिस दिन तुम निर्णय बदलोगे, उसी दिन जीवन बदल जाएगा। जीवन को देखने के ढंग पर ही सब कुछ निर्भर करता है।

मैं मुल्ला नसरुद्दीन के घर में मेहमान था। सुबह बगीचे में घूमते वक्त अचानक देखा कि नसरुद्दीन की पत्नी ने एक प्याला नसरुद्दीन के सिर की तरफ फेंका। नसरुद्दीन ने सिर झुका लिया। प्याला दीवार से टकराकर चकनाचूर हो गया। नसरुद्दीन ने भी देख लिया कि मैंने देख लिया है। वह बाहर आया और उसने कहा, 'क्षमा

करें, आप कहीं कुछ और न सोच लें, हम दोनों बड़े सुखी हैं। कभी-कभार पत्नी चीजें फेंकती है, मगर इससे हमारे सुख में कोई भेद नहीं पड़ता। मैं थोड़ा हैरान हुआ। मैंने पूछा, 'कैसे? तो उसने कहा, 'अगर उसका निशाना लग जाता है तो वह खुश होती है और अगर चूक जाता है तो मैं खुश होता हूँ। कभी निशाना लगता है, कभी चूकता है। सो, हम दोनों खुश रहते हैं।

जिंदगी को देखने के ढंग पर निर्भर करता है। जिंदगी को तुम ही बनाते हो, तुम ही देखते हो और फिर तुम ही व्याख्या करते हो। तुम्हारे संसार में कोई दूसरा प्रवेश नहीं करता। लेकिन इस सोच में एक कठिनाई है, इसलिए तुम इसे भूले हुए हो। कठिनाई यह है कि जब अनुभव करोगे कि मैं ही जिम्मेदार हूँ, तब तुम दुखी न हो सकोगे और अगर दुखी होना चाहते हो तो शिकायत नहीं कर सकोगे। तब तुम्हें दुखी होने और शिकायत करने का रस नहीं मिल सकेगा।

दुखी होने में भी बड़ा रस है, क्योंकि जब तुम दुखी होते हो, तब तुम सहानुभूति मांगते हो। सहानुभूति में भी बड़ा रस है। इसलिए तो लोग अपने दुख की कथा एक-दूसरे को बढ़ा-चढ़ा कर सुनाते हैं। क्या कारण है कि लोग दुख की इतनी कथा सुनाते रहते हैं। कोई सुनना भी नहीं चाहता। कौन उत्सुक होगा तुम्हारे दुख में? दूसरे, दुख की बातें सुनकर दूसरा भी उदास ही होगा। दूसरा तभी तक सुनता है, जब तक उसे आशा रहती है कि तुम भी उसका दुख सुनोगे। यह एक समझौता है - तुम हमें उबाओ, हम तुम्हें उबाएं। तुम अपने दुख की कथा कहकर हमें परेशान करो, हम अपने दुख की कथा कहकर तुम्हें परेशान करें।

इंसान दुख की इतनी चर्चा इसलिए करता है, क्योंकि वह इस सहानुभूति की अपेक्षा रखता है कि उसके दुख की बात सुनकर कोई उसे पुचकारेगा। इस तरह तुम दुख के माध्यम से दूसरे का प्रेम मांग रहे हो। जब भी तुम दुखी होते हो, तभी तुम्हें थोड़ी-सी आशा चारों तरफ से मिलती है। लोग तुम्हें सहारा देते मालूम पड़ते हैं। सहानुभूति दिखलाते हैं। हालांकि सहानुभूति कचरा है, लेकिन प्रेम के लिए वही निकटतम पूरक है। जिसको असली सोना न मिला हो, वह फिर नकली सोने से काम चलाने लगता है।

सहानुभूति नकली प्रेम है। प्रेम को तो अर्जित करना पड़ता है, क्योंकि प्रेम केवल उसी को मिलता है, जो प्रेम दे सकता है। प्रेम दान का प्रतिफलन है। तुम देने में असमर्थ हो, तुम सिर्फ मांग रहे हो। तुम भिखमंगे हो, सम्राट नहीं। भिखमंगे को रास्ते पर देखो। वह झूठे घाव अपने शरीर पर बनाकर बिल्कुल दुख से भरा होता है। तुम्हारे लिए 'न' करना मुश्किल हो जाता है। ग्लानि होती है, इतने दुखी आदमी को कैसे 'न' करो। अगर वह स्वस्थ तगड़ा है, तो तुम कहोगे कि 'काम करके कमाओ। लेकिन दुखी आदमी को देखकर तुम बोल नहीं पाते। तुम्हें सहानुभूति दिखानी ही पड़ती है- झूठी ही सही।

तुम दुख को इसलिए पकड़े हो, क्योंकि तुम्हें प्रेम नहीं मिला। जिसको प्रेम मिला है जीवन में, वह आनंदित होगा। वह आनंद को पकड़ेगा, दुख को नहीं। लेकिन तुम्हें सुविधा महसूस होती है शिकायत करने में। जब भी तुम कहते हो कि दूसरे तुम्हें दुखी कर रहे हैं, तब जिम्मेदारी का बोझ हट जाता है। जब मैं तुमसे कहता हूँ सारे शास्त्र तुमसे कहते हैं और सारे बुद्ध-लोगों ने एक ही बात कही है कि तुम ही जिम्मेदार हो, कोई और

नहीं, तब तुम्हें बड़ा बोझ मालूम पड़ता है। सबसे बड़ा बोझ तो यह मालूम पड़ता है कि अब शिकायत तुम किसी पर लाद नहीं सकते। उससे भी बड़ा बोझ इस बात का पड़ता है कि अगर तुम ही जिम्मेदार हो, तो सहानुभूति किससे मांगोगे? तब यह कठिनाई खड़ी होती है कि अगर तुम ही जिम्मेदार हो तो तुम्हें बदलाव करना होगा और बदलाव करना एक क्रांति है। एक रूपांतरण से गुजरना है। तुम्हारी पुरानी आदतें हैं, वे सभी तोड़नी होंगी।

तुम्हारा एक पुराना ढांचा है, वह गलत है। अब तक जो तुमने 'मकान बनाया है, वह पूरा का पूरा गलत है। लेकिन तुमने ही बनाया है। चाहे कितना ही बड़ा बना लिया हो, उसे गिराना पड़ेगा। इससे तुम्हें अतीत का सारा श्रम व्यर्थ होता महसूस होता है, इसलिए तुम इस सत्य से बचने की कोशिश करते हो। लेकिन, जितना तुम बचोगे, उतना ही तुम भटकोगे।

तुम्हें यह बात समझ लेनी चाहिए कि तुम ही अपने अस्तित्व के केंद्र हो। इसका कोई जिम्मेदार नहीं। इस सत्य को अगर स्वीकार कर लोगे तो जल्द ही सारे दुख खो जाएंगे। क्योंकि, एक बार यह साफ हो जाए कि मैं ही अपना खेल बना रहा हूँ, तो मिटाने में कितनी देर लगती है? तब आरोप लगाने के लिए कोई दूसरा नहीं होगा। अगर तुम दुख में ही रस लेना चाहते हो, तो तुम्हारी मर्जी।

OSHO

© 2015 OSHO International
Copyright & Trademark Information